प्रश्नः

''नये नियम की कलीसिया कब बनी थी?''

उज़रः

बाइबल के अनुसार होने वाली कलीसिया की जन्म तिथि से बहुत से प्रश्नों का उज़र मिल जाता है। उस तिथि का नवजात शिशुओं की सदस्यता के सही या गलत होने, सज़्त के दिन को मानने, धूप जलाने, साज़ बजाने, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मानने, पांव धोने, और यीशु के साथ क्रूस पर मरने वाले डाकू के उदाहरण को मानने से घनिष्ट सज़्बन्ध।

कलीसिया ही राज्य है

कलीसिया की जन्म तिथि के बारे में जानने के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कलीसिया राज्य जैसी ही है। ''कलीसिया'' शज़्द सीधे तौर पर कलीसिया के सदस्यों के बुलाए होने की विशेषता को बताता है, जबकि ''राज्य'' शज़्द कलीसिया के प्रबन्ध की ओर ध्यान दिलाता है, परन्तु दोनों शज़्द एक ही संस्था की बात करते हैं। यह तथ्य निज़्न बातों में देखा जाता है:

(1) राज्य का राजा ही कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों 1:13, 18)।

(2) राज्य का बीज ही कलीसिया का बीज है (लूका 8:11; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14)

(3) राज्य की कुंजियों का इस्तेमाल कलीसिया के द्वार खोलने के लिए किया गया था (मज़ी 16:19; देखिए प्रेरितों 2:47; KJV)।

(4) बपतिस्मे से एक पापी को राज्य में लाया जाता है, और बपतिस्मे से ही एक पापी को कलीसिया में लाया जाएगा है (यूहन्ना 3:5; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

(5) प्रभु की मेज राज्य में बताई गई है; और साथ ही, प्रभु भोज का कलीसिया में व्यापक महत्व है (लूका 22:29, 30; 1 कुरिन्थियों 10:16)।

(6) परमेश्वर का राज्य अविनाशी है, और कलीसिया भी अविनाशी है (इब्रानियों 12:28; इफिसियों 3:20, 21)।

भविष्य की कलीसिया

30 ईस्वी में यीशु के स्वर्गारोहण के दस दिन बाद एक निश्चित रविवार तक (जिसे यहूदी लोग ''पिन्तेकुस्त का दिन'' कहते थे) कलीसिया अर्थात राज्य भविष्य था। प्रभु के उस यादगारी दिन से पहले, राज्य अर्थात कलीसिया के आगे की ओर ध्यान दिलाया जाता था।

अपंग कलीसिया नहीं

यदि कलीसिया का जन्म यीशु के स्वर्गारोहण के दस दिन बाद एक निश्चित रविवार से पहले हुआ था, तो यह अपंग और व्यर्थ कलीसिया थी। यह सही है ज़्योंकि प्रभु के उस विशेष दिन से पहले कलीसिया होती तो वह:

(1) केवल यहूदी (मत्ती 10:5, 6; अन्यजातियों में से मसीही बनने वाले सबसे पहले लोग प्रेरितों 10 अध्याय में ही हैं)।

(2) आत्मा रहित (यूहन्ना 7:39)

(3) लहू रहित (प्रेरितों 20:28)

(4) सिर रहित (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)

(5) मसीह रहित (मत्ती 16:16-20)

(6) शक्तिहीन, कुछ न कर पाने वाली कलीसिया (देखिए लूका 24:49; प्रेरितों 1:4) होती।

विद्यमान कलीसिया

सप्ताह के उस महत्वपूर्ण पहले दिन के बाद, जिसे पिन्तेकुस्त कहा जाता है, कलीसिया का जब भी उल्लेख मिलता है वह उसी दिन की ओर ध्यान दिलाता था। उससे पहले और बाद के समय के पद 30 ईस्वी के पिन्तेकुस्त के दिन को केन्द्र बिन्दु रखकर दिए जाते हैं।

आरम्भ होने के स्थान का महत्व

30 ईस्वी में पिन्तेकुस्त के दिन राज्य अर्थात कलीसिया के (मरकुस 9:1; लूका 24:49) आने को पवित्र शास्त्र में ''आरम्भ'' (लूका 24:47; प्रेरितों 11:15) बताया गया है। जन्म की इस अलग स्थिति का अर्थ यह नहीं है कि उससे पहले दी गई यीशु की कोई भी शिक्षा अब लागू नहीं है। इसके विपरीत, अपने चेलों को उस तेजोमय संस्था का सदस्य बनने के लिए तैयार करते समय उसकी हर बात अपने राज्य या कलीसिया के आने को ध्यान में रखकर ही कही गई थी। पहाड़ी पर अपने उपदेश में दिए गए उसके सिद्धांत (मत्ती 5-7), किसी गलती करने वाले के साथ व्यवहार करने के बारे में उसकी शिक्षा (मत्ती 18:15-17), विवाह और तलाक के विषय में उसकी शिक्षा (मत्ती 19:3-9) को मत्ती 28:20 में उसकी आज्ञा में शामिल किया गया था। हमें वे *सब* बातें माननी आवश्यक हैं जिनकी उसने आज्ञा दी थी।

परन्तु कुछ ऐसी बातें भी थीं जो यीशु ने तो की थीं परन्तु मसीहियत में नहीं होनी थीं,

जैसे यहूदी फसह (मत्ती 26:18) और सब्त को मानना (लूका 4:16)। हमें उन आज्ञाओं को मानने की आवश्यकता नहीं है जो विशेष परिस्थितियों के लिए दी गई थीं, जैसे थैला या जूते न लेना (लूका 10:4), केवल यहूदियों में प्रचार करना (मत्ती 10:5, 6) और किसी को यह न बताना कि यीशु ही आने वाला मसीह था (मत्ती 16:20)।

इसी प्रकार, यीशु का चेलों के पांव धोना कभी कलीसिया की परम्परा के लिए नहीं दिया गया था। कलीसिया की स्थापना से पहले (उत्पत्ति 18:4; लूका 7:44) और बाद में भी (1 तीमुथियुस 5:10) पांव धोना घर में आए अतिथि के सम्मान के रूप में एक परम्परा थी। पहली सदी में भी यह कलीसिया की रीति नहीं रही।

अपनी निजी सेवकाई के समय, यीशु अपनी इच्छा से किसी के भी पाप क्षमा कर सकता था (मरकुस 2:10)। सम्भावना है कि क्रूस पर मरने वाले डाकू को बिना बपतिस्मा पाए ही उद्धार मिल गया हो, परन्तु उसी प्रभु ने जिसने उस डाकू को सांत्वना देने की बात कही थी, बाद में सब लोगों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी (मरकुस 16:15, 16)। सब लोगों के लिए पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने का नियम सबसे पहले कलीसिया के जन्म के समय ही लोगों में घोषित किया गया था। समझदार व्यक्ति कलीसिया के जन्म से पहले उद्धार पाने के ढंग को खोजने की कोशिश नहीं करेगा। यदि वह ऐसा करता है, तो उसे यह पता नहीं चलेगा कि उस डाकू के उदाहरण या हाबिल के पशुओं के बलिदान को मानना है या नहीं। इसके विपरीत यदि वह पिन्तेकुस्त के दिन सामर्थ के साथ कलीसिया के आरम्भ के बारे में स्पष्ट सोच रखता है, तो उसे साफ पता चल जाएगा कि उद्धार पाने के लिए क्या करना है। पिन्तेकुस्त के दिन, जिन लोगों ने आनन्द से परमेश्वर के वचन को ग्रहण कर लिया था उन्होंने किसी बात के पक्ष में जो कभी पिन्तेकुस्त से पहले उस डाकू के साथ हुई थी, अस्वीकार नहीं किया। बल्कि उन्होंने मन फिराकर बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 2:41)।

आज कलीसियाओं में नवजात शिशुओं की सदस्यता अधिक होने का एक प्रमुख कारण नये नियम की कलीसिया के जन्म दिन के महत्व को स्वीकार न कर पाना है। यह बात सत्य है कि यीशु के पृथ्वी पर रहने के समय इस्राएल में पुराने नियम के अनुसार नवजात शिशुओं की सदस्यता होती थी, परन्तु कलीसिया का सिद्धांत जिसकी स्थापना करने के लिए यीशु आया था यही है कि हर सदस्य ''प्रभु का ज्ञान'' रखेगा (इब्रानियों 8:11)। इसलिए, कलीसिया के जन्म दिन पर केवल उन्हीं लोगों को बपतिस्मा दिया गया था जो इतने बड़े थे कि वे सुनाए वचन को ग्रहण कर सकें।

पिन्तेकुस्त के दिन से पहले आराधना में धूप जलाना और गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल करना नियम था, परन्तु प्रेरितों ने, जिन्हें बांधने और खोलने की सामर्थ मसीह से मिली थी (मत्ती 18:18) नये नियम की कलीसिया से इन दोनों को निकाल दिया। इस तथ्य के बावजूद, कुछ लोग पुराने नियम की आराधना अर्थात पिन्तेकुस्त के दिन से पहले की बातों में जाकर, मसीही आराधना में धूप जलाने और गाने के साथ साज़ दोनों को मिला देते हैं। कुछ लोग धूप जलाने की बात तो नहीं मानते पर गाने के साथ साज़ों के होने पर ज़ोर देते

हैं। यदि किसी को 30 ईस्वी में पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के ''आरज़्भ'' का महत्व पता चल जाए, तो ये समस्याएं अपने आप ही खत्म हो जाएंगी।

कुछ लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के महान कार्य पर ध्यान दिलाकर उसके पीछे चलने का प्रयास करते हैं। यूहन्ना चाहे कितना भी बड़ा था, परन्तु उसका काम केवल आरज़्भ करने के लिए था (लूका 1:17; यूहन्ना 1:15)। नये नियम की कलीसिया का ''आरज़्भ'' यूहन्ना का सिर कटने के बाद ही हुआ था। इसलिए, समझदार व्यज़्ति परमेश्वर के वचन की सही रीति से व्याज़्या करके कलीसिया के जन्म से पहले और बाद में होने वाली घटनाओं के अन्तर की ओर ध्यान देगा।

उदाहरण के लिए इसी तरह, समझदार व्यज़्ति पुराने नियम के सज़्त के विषय में विचार करके बिना सोचे समझे इसे ''बाइबल में लिखा है'' कहकर इसे मानने के लिए नहीं कहेगा। बल्कि वह देखेगा कि यह बाइबल में *कहां* मिलता है। यदि वह कलीसिया के पिन्तेकुस्त के दिन के *बाद* मानते हुए परमेश्वर की कलीसिया को ग्रहण करता है, तो वह ऐसा ही देखेगा। परन्तु यदि उसे लगता है कि सज़्त के दिन को मनाने की किसी समय परमेश्वर की अनुमति थी, परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन के *बाद* यह दिन कलीसिया में नहीं मनाया जाता था (1 कुरिन्थियों 7:11; कुलुस्सियों 2:14-17) तो वह उसी उदाहरण को मानेगा। अपने किसी भी काम में अगुआई के लिए वह मसीहियत के आरज़्भ को महत्व देगा।

सारांश

नये नियम की कलीसिया के अस्तित्व में आने के बारे में थोड़ा सा भी पता चलने पर परेशान करने वाले बहुत से धार्मिक प्रश्नों का अपने आप ही जवाब मिल जाता है। सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने के लिए यह एक आवश्यक कुंजी है (2 तीमुथियुस 2:15)।

पाद टिप्पणी

[1]तिथियों में अन्तर है, मसीह के जन्म के लिए स्वीकृत तिथि के आधार पर, पिछले पाठ की पाद टिप्पणी 1 देखिए।

कलीसिया का आरम्भ कब हुआ ?

कलीसिया के आरम्भ की ओर पीछे को इशारा करती आयतें

96 ईस्वी — प्रकाशित. 1:5, 6; 2:1: स्थापित कलीसियाएं

65 ईस्वी — 1 तीमु. 3:15: स्थापित कलीसियां

45 ईस्वी — प्रेरितों 14:23: हर कलीसिया में ऐल्डर नियुक्त हुए

40 ईस्वी — प्रेरितों 8:1–4 कलीसिया पर सताव होता है

30 ईस्वी — प्रेरितों 2:47: परिवर्तित होने वालों को ''उनमें'' (अर्थात ''कलीसिया'' में; KJV) मिलाया जाता है

30 ईस्वी — प्रेरितों 2:1–41: **पिन्तेकुस्त का दिन**

30 ईस्वी — प्रेरितों 1:8: जी उठा यीशु प्रेरितों से प्रतीक्षा करने के लिए कहता है

कलीसिया के आरम्भ की ओर आगे को इशारा करती आयतें

29 ईस्वी — मत्ती 16:18; मरकुस 9:1 यीशु अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा करता है; सुनने वाले कुछ लोग इसे देखने के लिए जीवित होंगे

28 ईस्वी — मत्ती 6:10 यीशु... ''तेरा राज्य आए''

27 ईस्वी — मरकुस 1:15 यूहन्ना कहता है राज्य ''निकट'' है

लगभग 600 ई.पू. — दानि. 2:44: दानिय्येल ''राज्य'' की भविष्यवाणी करता है